फल परिवर्तन में वक्री ग्रहों की भूमिका

वक्री ग्रह अर्थात् उल्टी चाल या गति से चलने वाला ग्रह। ज्योतिष शास्त्र में सूत्र और चंद्रमा दो ऐसे ग्रह हैं जो वक्री नहीं होते हैं। राहु और केतु वक्री और स्थिर होते हैं जबकि बुध, मंगल, शुक्र, शनि ग्रह वक्री और मार्गी होते हैं। वास्तव में खगोलीय घटना के अनुसार कोई भी ग्रह वक्री नहीं होता है, परन्तु सापेक्ष निर्धारित दूरी के बाद वक्र गति से चलता हुआ दिखाई पड़ता है। साधारण भाषा में कहते हैं कि जातक सीधा है अथवा उल्टे दिमाग का है जैसे ही ये कहते हैं कि उल्टे दिमाग का है तो सभी को जातक से सावधान हो जाते हैं कि ये पता नहीं क्या कर दे? ऐसे ही जब कोई ग्रह वक्री हो जाता है तो उसके परिणाम में अचानक बदलाव देखने की क्षमता आ जाती है।

अर्चना गुप्ता

जब कोई ग्रह पृथ्वी के सर्वाधिक निकट होता है, तब वह वक्री होता है। इसलिए वह पृथ्वी पर तथा पृथ्वी के प्राणियों और अन्य जीवों पर सर्वाधिक प्रभाव डालता है। इसलिए वक्री ग्रह शक्तिशाली हो जाते हैं। वक्री ग्रह चेष्टाबली होते हैं और भ्रामक होते हैं। अपने प्रभाव अनियंत्रित, अस्थिर, अप्रत्याशित रूप में देते हैं। जातक को स्वयं पर विश्वास नहीं होता कि वह ऐसा कर सकता है।

वक्री ग्रहों के फल मार्गी ग्रहों से भिन्न होते हैं। सामान्यतः विद्वानों का मत है कि एक शुभ ग्रह के वक्री होने पर उसकी शुभता में कमी आ जाती है और अशुभ ग्रह के वक्री होने पर उसकी अशुभता बढ़ जाती है जबकि यह पूरी तरह से सत्य साबित नहीं हुआ है।

जब कोई ग्रह वक्री होता है तो उसकी ऊर्जा बाहर आकर कुछ करने के स्थान पर स्वयं अपने अन्दर प्रवाहित होने लगती है। जातक आत्मनिष्ठ हो जाता है। कई बार तो जातक को पिछले जन्म के अनुभवों को पुनः अनुभव करने का अवसर मिलता है। जिन जातकों की जन्मपत्रिका में लग्न, पंचम और दशम भाव की भाव मध्य के निकट मंगल, गुरु और शनि कोई दो ग्रह वक्री हों, तो उस जातक का महत्त्व बहुत अधिक बढ़ जाता है। वक्री ग्रह पिछले जन्म की शक्तिशाली पहलुओं को इस जन्म में लाकर पुनः उन पर विचार कर अपनी आत्मा की उन्नति का अवसर देते हैं जबकि नकारात्मक होने पर विकृत सोच वाला, कपटी, बेईमान बना सकता है।

चाहे कोई पूर्व जन्म के सिद्धान्तों को विश्वास करे या न करे लेकिन पिछले जन्म को आधार मानकर वक्री ग्रहों को समझने में सहायता मिलती है। यदि हम पुनर्जन्म के सिद्धान्त को मानते हैं तो यह भी मानना होगा कि पिछले जन्म के कर्मों का हमारे वर्तमान जीवन पर निश्चित प्रभाव पड़ता है।

यदि किसी जातक की जन्मपत्रिका में कोई ग्रह वक्री है तो इस बात का संकेत है कि उससे सम्बन्धित कोई महत्त्वपूर्ण घटना उसके पिछले जन्म में हुई होगी। यह संकेत देता है कि जातक ने उस घटना पर आवश्यक ध्यान नहीं दिया और उसे आवश्यक सीख नहीं ली और प्रकृति तथा उन्हें एक बार फिर से इस वर्तमान जीवन में जातक को उस अधूरी घटना के साथ नए सिरे से एक बार फिर से गुजरकर गौर करने का अवसर देना चाहती है।

प्रत्येक वक्री ग्रह एक विशिष्ट सीख देना चाहता है। वैदिक ज्योतिष कार्मिक सिद्धान्त को मूल रूप से स्वीकार करता है। जैसे किसी तुला लग्न की पत्रिका में शनि चतुर्थेश और पंचमेश होकर अष्टम भाव में वक्री होकर बैठे हों, तो जातक माता और संतान संबंधी उत्तरदायित्व को निभाने में पिछले जन्म में चाहे-अनचाहे कारणों से असफल रहा होगा।

वक्री ग्रहों के फल उनके विशिष्ट कार्यक्षेत्र अथवा कारकत्व के अनुसार ही होते हैं जैसे बुध का संचार बुद्धि के क्षेत्र में तथा मंगल का साहत दुर्घटना के क्षेत्र में गुरु शिक्षा अथवा संतान में। वक्री ग्रह अपने प्राकृतिक कारकत्व तथा जिस भाव का वह स्वामी है और जिस भाव में स्थित है उनके फल में कमी, देरी, हानि करते हैं। वक्री ग्रह अपनी राशियों के तत्त्व के अनुसार फल प्रदान करते हैं जैसे भूतत्त्व राशि। भौतिक स्तर पर वायु तत्त्व राशि, बौद्धिक स्तर पर, जल तत्त्व राशि भावनात्मक स्तर पर और अग्नि तत्त्व राशि में होने पर प्रबल मनोभाव और मोटिवेशनल रूप में अपने फल देते हैं। वक्री ग्रह कालपुरुष की जन्मपत्रिका की किस राशि में स्थित हैं, उसके अनुसार फल देते हैं।

जैसे कोई योगकारक ग्रह वक्री होकर वृषभ राशि (कालपुरुष की दूसरे/धन भाव की राशि में बैठा हो, तो वह भौतिक स्तर पर अपने अप्रत्याशित फल देगा।) एक ही राशि में एक से अधिक वक्री ग्रह हों, तो जिस ग्रह के अंश सबसे अधिक होंगे, वह सबसे अधिक जातक को प्रभावित करेगा। वक्री ग्रह मानसिक स्तर पर ज्यादा प्रभावित करते हैं। वक्री ग्रह जीव संबंधी सुख की हानि करते हैं जैसे मंगल छोटे भाई, बुध मां पक्ष के रिश्ते, गुरु संतान, शुक्र पत्नी, शनि नौकर। यदि कोई ग्रह वक्री नहीं हो तो भी निम्न परिस्थितियों में वक्री ग्रह जैसा फल देते हैं। जब कोई ग्रह दो वक्री ग्रहों में फंसा हो। जब उस ग्रह का स्वामी वक्री हो। जब वह किसी वक्री ग्रह का राशि स्वामी बने अथवा जब वक्री ग्रह के निकट अंशों में स्थित हो। इस प्रकार हम देखते हैं कि सूर्य चन्द्रमा भी वक्री जैसे फल दे सकते हैं। ऐसी स्थिति में पिता और माता के फलों में कमी आएगी। किसी भी ग्रह की शक्ति वक्री ग्रह के साथ होने से बढ़ जाती है।

जब कोई शुभ ग्रह बुध, गुरु, शुक्र यदि लग्न से चतुर्थ, सप्तम अथवा दशम भाव में वक्री हो तो अपने आधिपत्य में आने वाले भावों के शुभ फल नहीं देते। नैसर्गिक अशुभ ग्रह मंगल, शनि यदि लग्न से चतुर्थ, सप्तम, दशम भाव में वक्री होकर बैठे हों, तो वह अपने आधिपत्य भावों के प्रतिकूल फल नहीं देते। यदि कोई ग्रह प्रथम, पंचम, नवम भाव में वक्री होकर बैठा हो, तो वह शुभ फलप्रद होते हैं।

वक्री ग्रह द्वितीय, चतुर्थ, पंचम, सप्तम, नवम, दशम अथवा एकादश भाव में स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद होते हैं जबकि तृतीय, षष्ठ, अष्टम, द्वादश भाव में अशुभ फल देकर रोगों को बढ़ाते हैं। अष्टम भाव में अकारक ग्रह वक्री होकर स्थित हो, तो आयु में कमी करता है। जैसे षष्ठ भाव में वक्री मंगल हो, तो अग्नि से डर।

इन सभी बातों पर महान विद्वानों के मतों में भिन्नता है। हमारे सौरमंडल में शनि सूर्य से सबसे अधिक दूर है। उन्हें अपने भ्रमण काल में साढ़े 29 वर्ष लगते हैं। जन्मपत्रिका की एक राशि में ढाई वर्ष। शनि षष्ठ, अष्टम, दशम और द्वादश भाव का कारक है। शनि सबसे अधिक डरावना, अशुभ, तामसिक और वायु तत्त्व ग्रह है।

शनि की प्रकृति अलगाववादी है जो जीवन में बहुत उथल-पुथल करने में सक्षम है। यदि कोई जातक अनुशासनप्रिय, कठिन परिश्रमी, आत्मसंयमी और धैर्य रखने वाला, नीच प्रवृत्ति के विरुद्ध लड़ने की क्षमता रखने वाला हो तो वक्री शनि उस जातक को प्रतिकूल प्रभाव नहीं देते क्योंकि शनि की प्रकृति योगवादी होती है।

वह योगी को प्रतिकूल फल नहीं दे सकते। वक्री शनि सर्वोत्तम आकांक्षाओं को नष्ट कर देता है। कार्य में अचानक बाधाएं पैदा करता है। वक्री शनि के कारण जातक अंतर्मुखी होते हैं। यह भाग्य की शक्ति को बहुत प्रबल समझते हैं। आध्यात्मिक व्यक्तियों के बीच में सुरक्षा महसूस करते हैं।

वक्री शनि है संकेत करते हैं कि जातक अपने पिछले जन्म में कोई क्रूर शासक रहा होगा जिसने श्रमिक वर्ग का शोषण किया होगा अथवा जीवन की वास्तविकता से विरक्त आसान मार्ग की खोज में रहा होगा। पिछले जन्म में उसने अपने उत्तरदायित्व को

भली-भांति नहीं निभाया, अतः अपनी पुरानी असफलताओं से सबक लेकर सोचना चाहिए कि क्या उचित है? वक्री शनि के समय में कोई भी मार्ग सरल नहीं होता, अतः कोई भी योजना जल्दबाजी में नहीं बनानी चाहिए। सोच-समझकर योजना को अंतिम रूप देना चाहिए।

वक्री शनि यदि जन्मपत्रिका में योगकारक है तो अपनी राशि के अनुसार तीव्रता से शुभ फल देंगे और यदि वक्री शनि जन्मपत्रिका में अकारक होकर बैठे हैं, तो बहुत ज्यादा दुःख देंगे, लेकिन दोनों ही स्थितियों में जीव सम्बन्धी हानि तो करेंगे ही।

उदाहरण-1

जन्म दिनांक : 6 फरवरी, 1982
जन्म समय : 01:45 बजे
जन्म स्थान : अलीगढ़

प्रस्तुत जन्मपत्रिका वृश्चिक लग्न की है। केन्द्र खाली है। शनि अकारक है। वक्री शनि ने लग्न, लग्नेश, चन्द्र,

जन्मपत्रिका

चन्द्रेश तथा अष्टम भाव पर अपना प्रभाव बना रखा है। सप्तम दृष्टि पंचम भाव पर है। पत्रिका में अल्पायु योग है। शनि राहु शनि की दशा में संतान को जन्म देते समय जातिका की मृत्यु जनवरी, 2013 में हुई।

अमिताभ बच्चन

जन्म दिनांक : 11 अक्टूबर, 1942
जन्म समय : 16:02 बजे
जन्म स्थान : इलाहाबाद

हिन्दी सिनेमा के लोकप्रिय अभिनेता कुम्भ लग्न/लग्नेश, शनि चतुर्थ भाव में वक्री। षष्ठ भाव में बैठे उच्च के गुरु को देख रहे हैं। अष्टम भाव बहुत बली है क्योंकि यहां सभी केन्द्र त्रिकोण के स्वामी स्थित हैं। अष्टमेश बुध वक्री और उच्च के हैं। यहां शुभ ग्रह बुध अष्टम में सप्तम सूर्य और तृतीयेश मंगल के बीच है। लग्न राहु के नक्षत्र में है।

जन्मपत्रिका

इस कारण जातक ने बहुत उतार-चढ़ाव देखे। चन्द्रमा राहु के नक्षत्र में है। शनि के साथ षष्ठ-अष्टम सम्बन्ध में है। चन्द्र दिग्बल पक्ष बल में कमजोर है। दशमेश मंगल का अष्टम भाव में व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की पुष्टि करता है, लेकिन षष्ठ, नवम भाव में गजकेसरी योग ने समय-समय पर साथ दिया।

वक्री शनि की दशा जनवरी, 1971 में मिली। इन्होंने फिल्म जगत में पदार्पण किया। चतुर्थ भाव में वक्री शनि के कारण मां से बहुत अधिक प्यार करते हैं। जनता के बीच लोकप्रिय हुए। स्वास्थ्य संबंधी परेशानी लग्नेश वक्री होने के कारण शनि/चंद्र की दशा 1982 में पेट में बहुत गंभीर चोट आई। बुध/चंद्र की दशा 1998-99 में आर्थिक संकट का सामना करना पड़ा।

अतः निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि वक्री शनि अन्य ग्रहों की अपेक्षा अधिक अप्रत्याशित रिजल्ट देते हैं। शनि आयु कारक है। शनि दुःखदायक है। शनि कर्मचारी है। शनि के पास राजा से रंक और रंक से राजा बनाने की क्षमता है।

ज्योतिष सिद्धांत सदस्यता पत्र

नवा पासपोर्ट साईज फोटो

नाम .....
पिता का नाम .....
पूर्ण स्थाई पता : .....
ग्राम/शहर ..... जिला .....
पिन कोड : ..... राज्य .....
फोन नम्बर मय कोड .....
मोबाइल नं. .....

सदस्यता शुल्क : स्वीकार हो उस पर	चिह्न बनाये।	साधारण डाक द्वारा		कूरियर द्वारा	
प्रति कापी	40 रूपये	( )		80 रू.	( )
वार्षिक सदस्यता शुल्क (4 प्रति)	150 रूपये	( )		350 रू.	( )
पाँच वर्षीय सदस्यता शुल्क	700 रूपये	( )		1500 रू.	( )
आजीवन सदस्यता शुल्क	11000 रूपये	( )			

मैं ज्योतिष सिद्धांत पत्रिका का सदस्य बनना चाहता हूँ/चाहती हूँ। इस हेतु निर्धारित शुल्क नगद/चैक/डीडी द्वारा ''भारतीय ज्योतिष विज्ञान एवं वैदिक खगोल शास्त्र संस्था'' के नाम भेज रहा हूँ/रही हूँ। मेरी प्रति डाक द्वारा उपरोक्त पते पर भिजवाने की कृपा करें। मैं ज्योतिष सिद्धांत पत्रिका के सभी नियमों, सिद्धांतों का पालन करूंगा/करूंगी।

दिनांक : हस्ताक्षर

नोट : सभी पत्रिका साधारण डाक द्वारा भेजी जायेगी। कोरियर द्वारा मंगवाने पर कोरियर का शुल्क अतिरिक्त रहेगा। सदस्यता की नकद राशि **भारतीय ज्योतिष विज्ञान एवं वैदिक खगोल शास्त्र संस्था** के **आईसीआईसीआई बैंक खाता संख्या 679001700317,** जयपुर में जमा करवा सकते हैं।

बैंक :
आईसीआईसीआई बैंक
खाता संख्या 679001700317
IFSC Code : ICIC0006790 Branch : Sahakar Marg, Jaipur

पत्र व्यवहार का पता :
भारतीय ज्योतिष विज्ञान एवं वैदिक खगोल शास्त्र संस्था
31/51, सेक्टर-3, प्रताप नगर, साँगानेर, जयपुर-302033 (राज.)
फोन : 0141-4036684